MAA OMWATI DEGREE COLLEGE

HASSANPUR

NOTES

CLASS:- B.A. 1st Sem.

SUBJECT: - History (History And Tourism) (SEC)

B.A-Ist
History & Tourism

पर्यटन की अवधारणा, अर्थ एवं परिभाषा

प्राचीन काल से ही मानव जीवन मे पर्यटन विभिन्न रूप मे प्रचलित है। पाषाणकालीन मानव अपनी उदर पूर्ति हेतु जगह-2 घूमता रहता था। यद्यपि मानव के घुमंतु जीवन को पर्यटन के वर्तमान स्वरूप से तो नही जोडा जा सकता है किन्तु पर्यटन का प्रारम्भिक स्वरूप यही था। मानव द्वारा अपनी उदर पूर्ति हेतु इधर-उधर विचरण करने से उसे भोजन तो मिलता था साथ ही उसे प्रकृति के विभिन्न रूप से ज्ञान होता था। इससे उसको प्राकृतिक शक्तियो से सामना होने पर वह उनसे बचने का प्रयास भी करता था। सुबह सूर्योदय होने पर सूर्य की लालिमा ने उसे प्रभावित किया तो शाम को पर्वतो या सागर मे होने वाले सूर्यास्त से वह रोमांचित हो उठा। इसी तरह वह जब कभी किसी सुन्दर झील के किनारे या पर्वत की तलहटी मे या किसी हरे-भरे मैदान मे विचरण करता तो उसे अपूर्व आनंद प्राप्त होता है। इस प्रकार मानव के घुमंतू जीवन की विभिन्न घटनाओ, प्रकृति के विविध रूपो व उनके बार-2 दर्शन, पर्वतो, घाटियो, झीलो व इन्हे देखकर अप्रतिम सुन्दर अनुभव की घटनाओ ने पर्यटन को जन्म दिया। ऐतिहासिक दृष्टि से पर्यटन को विभिन्न वर्गो मे बांटा जाता है।

Date:
Page No.:

प्राचीन काल
साम्राज्यों का काल
महान यात्राओं का दौर
संक्रमण काल
आधुनिक काल

प्राचीनकाल मे पर्यटन
पाषाणकाल मे जहाँ पर्यटन मानव की उदार प्रवृति मनोरंजन, रोमांच आदि से जुडा हुआ था वहीं ताम्र पाषाण काल, हड़प्पा सभ्यता काल मे यह व्यापारिक गतिविधियों से भी जुड गया। इन सभ्यताओं के लोग अपनी व्यापारिक गतिविधियों के लिए एक स्थान से दूसरे स्थानों का भ्रमण करते रहते थे, ऐतिहासिक अध्ययन का ज्ञात होता था कि सर्वप्रथम सुमेरिया के लोग अपने व्यापार तथा रहने खाने की सुविधाओं हेतु मुद्रा का प्रयोग करते रहते थे। इस प्रकार उसने पर्यटन को बढावा देने के लिए सुविधाएँ प्रदान की थी। प्राचीन काल मे ईरान के लोग विश्व के लोग अनेक देशों की यात्राएं करते थे।

पर्यटकों की रूचि के सांस्कृतिक एंव ऐतिहासिक स्मारक गुफाएँ।
ऐतिहासिक पर्यटन की दृष्टि से भारत एक समृद्ध पर्यटन स्थल है यहाँ प्रागैतिहासिक

Date:
Page No.: 2

काल से ही पर्यटन हेतु रोमांचक पर्यटन स्थल है। प्रागैतिहासिक मानव जीवन की झलकियाँ प्रस्तुत करती हुई कई महत्वपूर्ण गुफाएँ संपूर्ण भारत मे पायी जाती है। इन गुफाओ मे तत्कालीन मानव जीवन से सम्बन्धित चित्र आदि मानव के जीवन पर पर्याप्त प्रकाश डालते है। उत्तराखण्ड मे लाखु उड्यार, गोरख्या उड्यार, फडकानौली, ल्वेथाप कसारदेवी आदि स्थानो पर स्थित गुफाएँ एंव उनमे उकेरे गये चित्र तत्कालीन मानव सभ्यता पर प्रकाश डालते है। जम्मू-कश्मीर मे गुफकराल तथा बुर्जहोम नवपाषाण कालीन मानव जीवन पर पर्याप्त जानकारी प्रदान करते है। विश्व के विभिन्न धर्मों का यह मिलन स्थल है। इसीलिए यहाँ की समृद्धि है। भारतीय संस्कृति की अलग विशेषता है। यहाँ का रहन-सहन, खान-पान, सामाजिक जीवन, धार्मिक मान्यताएं इसकी जीवन-शैली को अलग खडा करती है। इसीलिए हिन्दुत्व को एक जीवन-शैली के रूप मे स्वीकार किया गया है। पर्यटकों की रूचि के सांस्कृतिक एंव ऐतिहासिक स्मारक : गुफाएं

गुफाएँ

पांचवा पडाव: कोटी
रेंज मे राजजात आगे बढती है। धारकोट

Date :
Page No. :

तक चढ़ाई चढ़नी पड़ती है। धारकोट घण्डियाल और सिमतोली गाँवों से पूजा पाकर यात्रा सिमतोली धार तक पहुँच जाती है।

विरासत: अर्थ एवं परिभाषा

विरासत वह है। जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है। प्रत्येक स्थल उस देश विशेष की सम्पत्ति होती है। जिस देश मे वह स्थल स्थित है। परन्तु अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को इसके संरक्षण की जिम्मेदारी होती है, और हमे इन्हें अगली पीढ़ी को सौंपना है। ये विरासत सांस्कृतिक परंपराओं ऐतिहासिक सौंदर्य, पुरातात्विक, वैज्ञानिक उपलब्धियों के अलावा स्मारकों इमारतों, संकटापन्न जीवों के प्राकृतिक निवास स्थलों आदि के रूप मे मौजूद है।

विश्व विरासत दिवस

विश्व विरासत दिवस प्रत्येक वर्ष 18 अप्रैल को मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र की संस्था यूनेस्को ने हमारे पूर्वजों को दी हुई विरासत को अनमोल मानते हुए और लोगो द्वारा इन्हें सुरक्षित एवं संभाल कर रखने के उद्देश्य से ही इस दिवस को मनाने का निर्णय लिया था।

वैसे तो बीता हुआ कल कभी वापस नही आता। लेकिन उस काल मे बनी इमारतों और लिखे हुए साहित्य हमेशा सजीव

Date :
Page No. : 3

बनाए रखते है।

इतिहास

पहला विश्व विरासत दिवस 18 अप्रैल 1982 मे ट्यूनीशिया मे इन्टरनेशनल काउंसिल ऑफ मोनुमेंट्स एंड साइट्स द्वारा मनाया गया था, एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन ने 1968 ई० मे विश्व प्रसिद्ध इमारतों और प्राकृतिक स्थलों की रक्षा के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान रखा गया था। जहाँ से प्रस्ताव पारित हुआ।

संग्रहालय: राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली, प्रिंस वेल्स, म्यूजियम, मुम्बई, विक्टोरिया मेमोरियल म्यूजियम, कोलकाता, सालारजंग म्यूजियम, हैदराबाद
प्राचीन काल से ही मानव मे अच्छी वस्तुओं का संग्रह करने की प्रवृत्ति रही है। यद्यपि संग्रह की यह प्रवृत्ति मानव मे अपनी उदर पूर्ति से आरम्भ हुई जब उसने अपनी सुरक्षा मिटाने के लिए कंद मूल फल का संग्रह करना आरंभ किया। इसी कारण उसने अपने निवास स्थान पर शिकार मे उपयोग किये जाने वाले औजारो का खाने-पीने की वस्तुओं का, अपने लिए आवश्यक समझी जाने वाली वस्तुओं आदि का संग्रह किया। जिनसे मानव सभ्यता का विकास एवं भूत नवीन परिवर्तनों का जानकारी मिलती है।

संग्रहालय की परिभाषा
संग्रहालय एक ऐसा भवन है। जिसमे ऐतिहासिक

वैज्ञानिक कलात्मक एवं रुचि से सम्बन्धित वस्तुओं का संग्रह एवं प्रदर्शन किया। इस तरह संग्रहालय को निम्नवत भी परिभाषित किया गया है।

द्वितीय पड़ाव: नौटी

ईड़ा बधाणी से नौटी के लिए 10 किलोमिटर की यात्रा करनी होती है। ईड़ा बाधणी में रात्रि विश्राम के बाद अपनी सभी सहेलियों से मिलकर नन्दा विदा लेती है नन्दा को ईड़ा बाधणी से विदा किये जाने वाला दृश्य भी अत्यंत मार्मिक एवं द्रवित कर देने वाला है। माता पिता नन्दा को धीरज बांधते उसे कहते हैं कि उसके साथ तो सारा राजसी बेडा जा रहा है। वह अकेले नही है।

तीसरा पड़ाव: कांसुवा

राजा के अनुजों का गांव कांसुवा नौटी से लगभग 10 किलोमिटर की दूरी पर है। समुद्र तल से इस स्थल की ऊँचाई 1530 मी० है। नौटी से कांसुवा के लिए नन्दा की विदाई का दृश्य मार्मिक होता है। विशेष पूजा अर्चना और विधि की विदाई का दृश्य अत्यन्त मार्मिक होता है। विदाई के समय नौटी गाँव के समस्त नर-नारियों के आँखों में

होती है। समूचा वातावरण भावुक हो जाता है। जात में शामिल होने आये अनेकों देशी - विदेशी श्रद्धालु व पर्यटक भी द्रवित हो जाते हैं।

नन्दा विदाई के मार्मिक दृश्य को एक अमेरिकी शोध कर्ता ने प्रत्यक्ष रूप से वर्णन कर कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत की है- । आम की लकड़ी से बनी पालकी सज गयी, मोतियों की झालरें लटका दी गई, देवी के घण्टे बजे तो ढोल, शंख और झंकारें बजने लगे नन्दा विदाई में माँ आँसू बहाने लगी। माँ मेरे आँसू ले पोंछो मैं सबको छोड़ जा रही हूँ। माँ ने सुबकते हुए नन्दा को पालकी में बिठाया। जाओ बेटी। सुखी रहो! माँ कैसे जाऊँ! इस सुन्दर आँगन को नौ खम्भे तिबारी को कैसे बिसराऊँ। इधर पीतल की पालकी हिलने लगी तुरही बजने लगी, सभी परस्पर लिपटने लगे, कुछ लोग कहने लगे। कुछ वर्षों बाद

अवश्य मिलेगी । जाओ कैलाश ! ऊँचा कैलाश ! माँ ! माँ ! माँ ! कहार चल पड़े ! सारा वातावरण सिसकियों से भर उठा ।

गुफाएँ :

भारत में गुफाओं का इतिहास प्रागैतिहासिक काल से ही आरम्भ हो जाता है । क्योंकि प्रागैतिहासिक जीवन से सम्बन्धित चित्र इन गुफाओं में पाये जाते हैं । इस प्रकार मानव जीवन के आरम्भ से ही भारत में अनेक गुफाएँ मौजूद हैं। इनमें भीमबेटका, गुफककराल, बुर्जहोम, गोरख्या, उदयगिर, लाखु उडयार आदि प्रमुख हैं । कालांतर में मौर्य काल में बौद्ध धर्म के भिक्षुओं के लिए मौर्य सम्राटों द्वारा गया की पहाड़ियों में गुफाओं का निर्माण किया गया । यहां पर अशोक द्वारा बनवायी गयी दो गुफाएँ एक समतल आयताकार बाह्य कक्ष समान है, जिसके द्वारा एक ओर वायाकृति भीति एवं ऊपर लटकती हुई ओलातियों से युक्त एक भीतरी कक्ष है । अशोक द्वारा बनवायी गयी इन गुफाओं के निर्माण से

गुफाओं के विकास में एक नया आयाम जुड़ गया। अशोक द्वारा बराबर की पहाड़ियों पर सुन्दर गुफाओं का निर्माण किया गया तथा कालांतर में अजंता और एलोरा जैसी प्रसिद्ध गुफाओं का निर्माण कार्य प्रारम्भ हुआ, जिससे गुफाओं का महत्व और भी बढ़ गया।

अजंता की गुफाएं:

भारत का यह ऐतिहासिक पर्यटक स्थल महाराष्ट्र राज्य के औरंगाबाद जिले में स्थित है। ये गुफाएं जलगांव से 64 कि.मी. था औरंगाबाद से 104 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। ये गुफाएं सुन्दर पहाड़ियों के प्राकृतिक वातावरण में बनायी गयी है। इसलिए ये निवास तथा तपस्या हेतु सर्वाधिक उपयुक्त है। यह तो स्पष्ट नहीं है कि सर्वप्रथम किसने इन गुफाओं का निर्माण आरम्भ कराया था, किन्तु इतना ज्ञात होता है कि इनका निर्माण 2री ई० पू० प्रारम्भ किया गया था। यहां की सर्वाधिक नयी गुफा का निर्माण

आठवीं सदी में किया गया था।
यहाँ से सर्वाधिक नयी गुफा
का भी इन गुफाओं का
निर्माण कार्य चलता रहा। अजंता
में कुल ३० गुफाएँ हैं। अजंता
की खोज सन् १८१९ ई. में मद्रास
के सैन्य अधिकारियों द्वारा हुई।
उसके तीस वर्ष बाद १८२२ ई.
में विलियम एरस्किन ने बॉम्बे लिटरेरी
सोसाइटी के लिए एक लेख में
अजंता में प्राप्त कला मंदिरों का
विस्तृत वर्णन पढ़ा। फिर १८२४ ई.
में जेम्स ई. अलेक्जेंडर ने इन
गुफाओं का परिचय किया और
उन्होंने इसमें सुरक्षित सुन्दर चित्रों
की सूचना रॉयल एशियाटिक सोसाइटी
को दी। १८२४ ई. में भारतीय
मूर्तिकला तथा वास्तुकला के विशेषज्ञ
जेम्स फर्ग्युसन ने इन चित्रित गुफाओं
का विवरण

Date :
Page No. :

औपनिवेशिक वास्तुकला

भारत में औपनिवेशिक वास्तुकला का प्रारम्भ होने से पूर्व पुर्तगालियों ने गोआ में आइबेरियाई शैली के बड़े-बड़े गिरजाघरों का निर्माण कराया। यद्यपि ये गिरजाघर इतने बड़े तो नहीं थे, जितने बाद में अंग्रेजों द्वारा बनवाये गये। किन्तु इनका निर्माण भारत में एक नवीन वास्तुकला शैली के रूप में अवश्य किया गया था।

इसी प्रकार फ्रांसीसियों ने भी भारत में अपनी बस्तियों में अपने देश के गिरजाघरों का निर्माण करवाया। अंग्रेजों ने भी प्रारम्भ में अपने निजी भवनों का निर्माण पाश्चात्य शैली के आधार पर किया।

भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का आरम्भ सामान्यतया प्लासी के विजय के बाद माना जाता है। यद्यपि प्लासी की विजय के अंग्रेजों को केवल बंगाल, बिहार तथा उड़ीसा पर ही प्रभाव स्थापित हुआ था।

Date :
Page No. : 8

किन्तु यह प्रभाव इतना महत्वपूर्ण था कि इसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना के द्वार खोल दिये। जब अंग्रेजों का बंगाल पर आधिपत्य हो गया। तो उन्होंने कलकत्ता में अपनी रेजीडेंसी को नये ढंग से बसाने का प्रयास किया तथा रेजीडेंसी भवन को पाश्चात्य ढंग से निर्मित किया। इस तरह कलकत्ता में औपनिवेशिक वास्तुकला के प्रथम दर्शन होते हैं। यद्यपि इससे पूर्व भी अंग्रेजों द्वारा सूरत, मद्रास, तथा बम्बई में अपनी बस्तियाँ बसायी गयी, जिनमें उन्होंने लघु स्तर पर पाश्चात्य वास्तुकला का प्रवेश किया, किन्तु स्पष्टतः औपनिवेशिक वास्तुकला का उदाहरण कलकत्ता का प्रसिद्ध भवन "गवर्नर हाउस" के रूप में देखने को मिलता है। यद्यपि इस काल में अंग्रेजों के अतिरिक्त पुर्तगाली फ्रांसीसी और डचों ने भी अपनी बस्तियाँ तथा गिरजाघरों का निर्माण यूरोपियन पद्धति के अनुसार किया। इनमें से एक

Date:
Page No.:

महत्वपूर्ण गिरजाघर ई. में कलकत्ता में बनाया 1787 गया। सेंट जॉन का गिरजाघर है। इस गिरजाघर का नक्शा लेफ्टिनेंट आगा ने तैयार किया था। पर्सी ब्राउन के अनुसार इस गिरजाघर का नक्शा वालब्रुक के स्टीफेन्स चर्च के आधार पर तैयार किया गया है। भारत में यूरोपीय शैली के आधार पर इमारतों का निर्माण उन्नीसवीं सदी में आरम्भ हुआ। इनमें भी सर्वप्रथम कलकत्ता का गवर्नर हाउस बनाया गया, जिसे औपनिवेशिक कालीन वास्तुकला का पहला उदाहरण माना जा सकता है। इस भवन का निर्माण चार्ल्स वायट द्वारा डर्बीशायर के "केडिलस्टन हाल" के आधार पर किया गया प्रतीत होता है। इसके बाद अनेक ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों द्वारा अनेक इमारतों का निर्माण किया गया। इनमें कई बड़े-बड़े भवनों का निर्माण धनी व्यक्तियों द्वारा भी किया गया। यूरोपीय पद्धति की इस वास्तुकला को पर्सी ब्राउन ने पुनरुद्धार

Date:
Page No.: 9

कला के नाम से पुकारा है।

औपनिवेशिक वास्तुकला की विशेषताएँ

औपनिवेशिक वास्तुकला के भवनों की प्रमुख विशेषता यह थी कि इन भवनों के सामने घास का मैदान और बगीचा लगाया जाता था। भवन निर्माण में यूरोपीय शैली का प्रयोग किया जाता था। यद्यपि भवनों के स्तम्भ तथा गैलरियों के निर्माण पर भारतीय वास्तुकला का स्पष्ट प्रभाव दिखायी देता है। ब्रिटिश शासन के प्रारम्भिक काल में औपनिवेशिक वास्तुकला का समुचित विकास नहीं हो पाया, क्योंकि सरकार भारतीय वास्तुकला का समुचित विकास नहीं हो पाया, क्योंकि सरकार भारतीय वास्तुकला को प्रोत्साहन नहीं देना चाहती थी तथा स्थानीय राजा महाराजा भी यूरोपीय वास्तुकला के प्रति उतने रुचि नहीं थे। इस कारण इस काल में यूरोपीय तथा भारतीय वास्तुकला के मिले-जुले प्रभाव से नई औपनिवेशिक वास्तुकला का पर्याप्त विकास नहीं हो पाया।

Date :
Page No. :

इंटरनेशनल टूरिज्म:

यदि आप यात्रा करना पसंद करते हैं और लोगों के साथ घुलने - मिलने और प्रबंधन करने में अच्छे हैं, तो ट्रैवल एंड टूरिज्म कोर्सेस अच्छा विकल्प है। आप क्लास 12वीं पास करने के बाद ट्रैवल एंड टूरिज्म कोर्सेस कर सकते हैं और पर्यटन उद्योग में अपना करियर जल्दी शुरू कर सकते हैं।

पर्यटन के 3 प्रकार क्या है?

लोग कई अलग - अलग कारणों से और कई अलग - अलग तरीकों से यात्रा करते हैं - जिसका अर्थ है कि यात्रा उद्योग को यात्रियों की आवश्यकताओं के अनुरूप ढलना होगा। हमने जो सूचीबद्ध किए हैं, उनके अलावा पर्यटन के कई अन्य प्रकार भी हैं, जैसे चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, डार्क पर्यटन, और भी बहुत कुछ।

Date :
Page No. : 20

पर्वतीय पर्यटन

अगर आपको प्रकृति से प्यार है, तो पहाड़ों पर जाना आपकी छुट्टियाँ बिताने का सबसे अच्छा तरीका हो सकता है। पर्वतीय पर्यटम खेल प्रेमियों के बीच लोकप्रिय है, क्योंकि यह प्रकृति में सक्रिय होने के बहुत सारे अवसर प्रदान करता है; स्कीइंग, हाइकिंग और माउंटेन बाइकिंग इनमें से कुछ ही है।

हाल के वर्षों में पर्वतीय पर्यटन में स्थिरता एक प्रमुख विचार रहा है, क्योंकि पहाड़ों में अक्सर नाजुक पारिस्थितिकी तंत्र होते हैं जो बड़ी संख्या में आगंतुकों या सामूहिक पर्यटन को बर्दाश्त नहीं कर सकते। यात्रा कार्यक्रम पहाड़ी पगडंडियों का अनुसरण करते हैं और आगंतुकों को अक्सर मार्गों से भटकने या निर्दिष्ट क्षेत्रों के बाहर शिविर लगाने की अनुमति नहीं होती है।

शहरी पर्यटन

शहरी पर्यटन एक प्रकार का पर्यटन है जो विभिन्न जनसांख्यिकी समूहों के बीच अत्यधिक लोकप्रिय है, जिनमें बैकपैकर्स से लेकर लग्जरी यात्री तथा हाल ही में स्नातक हुए लोगों से लेकर सेवानिवृत्त लोग तक शामिल हैं।

में शीर्ष शहरी पर्यटन स्थलों 2022 में पेरिस, दुबई, एम्स्टर्डम, मैड्रिड, रोम, लंदन और न्यूयॉर्क शामिल है, और हर साल बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। यूरोमॉनीटर इंटरनेशनल द्वारा संकलित शीर्ष 100 सूची में, यूरोप सबसे अधिक प्रतिनिधित्व वाला महाद्वीप है, जिसमें 100 में से 40 शहर हैं।

बहुत से लोग यात्रा करते हैं - लेकिन पूरी तरह से अलग कारकों से।

लोग कई अलग-अलग कारणों से और अलग-अलग तरीकों से यात्रा करते हैं - जिसका अर्थ है कि यात्रा

उद्योग को यात्रियों की आवश्यकताओं के अनुरूप बनना होगा।

हमने जो सूचीबद्ध किए हैं, उनके अलावा पर्यटन के कई अन्य प्रकार भी हैं, जैसे चिकित्सा पर्यटन, धार्मिक पर्यटन, स्वास्थ्य पर्यटन, डार्क पर्यटन और भी बहुत कुछ। हालाँकि मोटे तौर पर हम यात्रियों की प्रेरणा के आधार पर अवकाश और व्यावसायिक पर्यटन को दो मुख्य श्रेणियों में से एक मान सकते हैं। आपको अपनी पूरी खेल टीम के लिए उपयुक्त आवास की ऑनलाइन खोज करने में घंटों बिताने की आवश्यकता नहीं है; ट्रैवलपर्क को आपके लिए काम करने दें। बाजार में सबसे बड़ी यात्रा सूची के साथ, हम उड़ानें, ट्रेनें, कार किराए पर लेने और आवास की व्यवस्था कर सकते हैं ताकि आपकी टीम जीत पर ध्यान केंद्रित कर सके।

Date :
Page No. :

ग्रामीण पर्यटन :
ग्रामीण पर्यटन उन लोगों के बीच लोकप्रिय है जिन्हें शहरी जीवन की भागदौड़ से छुट्टी चाहिए।
आमतौर पर, यह टिकाऊ पर्यटन का एक रूप है, जहां आप सरल जीवनशैली और शांत, कम प्रदूषित वातावरण का अनुभव करने के लिए दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में जाते हैं।

स्थानीय लोगों को ग्रामीण पर्यटन से कई अलग-अलग तरीकों से लाभ हो सकता है। जबकि आगंतुक विभिन्न पर्यटन गतिविधियों में संलग्न हो सकते हैं, जैसे कि पैदल यात्रा, पर्यटन, शिकार, मछली पकड़ना आदि।
ट्रैवल एजेंट इनसे परिचित होते हैं और यात्रा को आसान बना सकते हैं।
लेकिन स्वतंत्र यात्री भी अपने दम पर उद्यम कर सकते हैं और अपने कागजी काम खुद कर सकते हैं।

Date :
Page No. : 12

प्रेरणा के अनुसार पर्यटन के 8 प्रकार :

हम यात्रियों की प्रेरणाओं, लक्ष्यों और जरूरतों के आधार पर पर्यटन के विभिन्न प्रकारों को भी परिभाषित कर सकते हैं। इन्हें पर्यटन के 8 मुख्य प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है:

पर्यटन :
अवकाश पर्यटन एक व्यापक श्रेणी है जिसमें कई अलग-अलग चीजें शामिल हो सकती हैं: साहसिक पर्यटन, पारिस्थितिक पर्यटन, सांस्कृतिक पर्यटन, शहरी पर्यटन, आदि।
अवकाश पर्यटन को सरल शब्दों में आपके खाली समय के दौरान पर्यटन के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिसमें आप आराम करते हैं और अपने से भिन्न वातावरण का अनुभव करते हैं।
स्थानीय पर्यटक आकर्षण अक्सर अवकाश पर्यटन का प्रमुख केन्द्र होते हैं; हालांकि आप अपने रिसॉर्ट परिसर में आराम

Date :
Page No. :

करने का निर्णय ले सकते हैं; तथा उदाहरण के लिए, बस कुछ रुपा उपचारों की बुकिंग करा सकते हैं।

खेल पर्यटन

खेल या साहसिक पर्यटन अवकाश पर्यटन का एक और प्रकार है जो राफ्टिंग, स्कीइंग, स्नोबोर्डिंग, सर्फिंग, डाइविंग, साइकिलिंग और अन्य जैसे खेल गतिविधियों से संबंधित है। वैकल्पिक दूर से दूरदराज के स्थानों पर खेल पर्यटन में शामिल होना आसान हो सकता है, बशर्ते इसके कि आप खुद ही सब कुछ व्यवस्थित करें।

पसंद का स्थान इस बात पर निर्भर करेगा कि आप कौन सा खेल खेलना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप गोताखोरी में रुचि रखते हैं, तो आप अच्छी तरह से संरक्षित कोरल रीफ और डाइविंग स्कूलों के अच्छे विकल्प वाले स्थानों की तलाश करना चाहेंगे।

Date :
Page No. : 13

सांस्कृतिक पर्यटन:

यदि आप अन्य संस्कृतियों के बारे में भावुक हैं, तो सांस्कृतिक पर्यटन संभवतः आपके सपनों की छुट्टी का विचार है, जहां आपको दूसरे देश की सांस्कृतिक विरासत का अनुभव मिलता है, जैसे वास्तुशिल्प स्मारक, साहित्य, धर्म, त्यौहार, रंगमंच, संगीत, व्यंजन, और बहुत कुछ!

अपने समृद्ध इतिहास के कारण यूरोप सांस्कृतिक पर्यटन के लिए एक लोकप्रिय गंतव्य है और कई यूरोपीय देशों में हर साल बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं।

व्यावसायिक यात्रा में ऑनलाइन बुकिंग ने क्रांति ला दी है- और जबकि व्यावसायिक यात्रा को प्रबंधित करने के कई तरीके हैं; ट्रैवल मैनेजर और एडमिन स्टाफ के लिए सबसे कुशल विकल्पों में से एक ट्रैवलपर्क जैसे व्यावसायिक यात्रा प्लेटफॉर्म का उपयोग करना है।

Date :
Page No. :

एक ही प्लेटफॉर्म से आप यात्रा की योजनाएँ प्रबंधित कर सकते हैं, बुक कर सकते हैं और यात्रा की योजनाएँ प्रबंधित कर सकते हैं और साथ ही यात्रा व्यय को ट्रैक कर सकते हैं।

कभी-कभी, व्यवसायिक यात्री अवकाश के लिए अपनी यात्राएं बढ़ा देते हैं या दोनों को मिला देते हैं जिसे अब 'ब्लीजर' के नाम से जाना जाता है।

तीन पर्यटन श्रेणियाँ

मोटे तौर पर, यूएनडब्लूटीओ के अनुसार, गंतव्य और प्रस्थान के देशों के आधार पर पर्यटन के तीन मुख्य रूप हैं: घरेलू पर्यटन, अंतर्गामी पर्यटन, और बहिर्गामी पर्यटन।

घरेलू पर्यटन

घरेलू पर्यटन को अपने निवास देश के भीतर व्यापार या अवकाश के उद्देश्य से यात्रा करने के रूप में परिभाषित

किया जाता है।

आमतौर पर अंतर्राष्ट्रीय यात्रा की तुलना में इसे व्यवस्थित करना बहुत आसान होता है, क्योंकि आपको अतिरिक्त कागजी कार्रवाई, स्वास्थ्य जांच की आवश्यकता नहीं होती है, और आप आसानी से अपने गंतव्य तक घरेलू उड़ान, बस या ट्रेन की सवारी कर सकते हैं।

अंतर्गामी पर्यटन

जब आप किसी दूसरे देश में प्रवेश करते हैं, तो यह गंतव्य देश के लिए इनबाउंड पर्यटन होता है। उदाहरण के लिए, यदि आप अमेरिका से स्पेन की यात्रा करते हैं, तो यह स्पेन के लिए इनबाउंड पर्यटन है।

आउटबाउंड पर्यटन:

आउटबाउंड पर्यटन में आप देश से दूसरे देश जाते हैं। अगर हम पिछले जैसा ही उदाहरण लें, अगर आप अमेरिका से स्पेन जाते हैं, तो

यह अमेरिका के लिए यात्रा और पर्यटन उद्योग कई देशों में स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं में एक प्रमुख योगदानकर्ता है। महामारी से पहले, पर्यटन क्षेत्र का वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद में 10.3% हिस्सा था, और यह ठीक होने की राह पर है।

ट्रैवल एजेंसी के प्रकार

ट्रैवल एजेंसियों को मूल रूप से दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है: खुदरा ट्रैवल एजेंसियां और थोक ट्रैवल एजेंसियां।

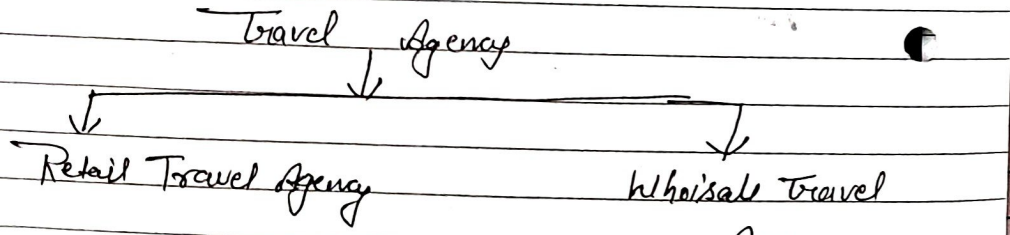

ट्रैवल एजेंसी के कार्य और सेवाएं

आज, ट्रैवल एजेंसियों को यात्रा और पर्यटन के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में मान्यता दी गई है और वे वैश्विक स्तर पर यात्रा और पर्यटन उद्योग का एक अभिन्न अंग बन गए हैं। वे 90% से अधिक अंतर्राष्ट्रीय और 70% घरेलू पर्यटक यातायात के लिए जिम्मेदार हैं। इसके अलावा, सभी ट्रैवल एजेंसियों का 60% से ज्यादा राजस्व व्यावसायिक यात्राओं से आता है। ज्यादातर ट्रैवल एजेंसियां वाणिज्यिक और अवकाश यात्रा दोनों ही तरह की यात्राएं बेचती हैं, लेकिन कई ट्रैवल एजेंसियां ऐसी भी हैं जो सिर्फ एक या दूसरे क्षेत्र में ही विशेषज्ञता रखती हैं।

यात्रा कार्यक्रम की तैयारी

पर्यटक यात्रा कार्यक्रम शब्द का उपयोग यात्री के दौरे में मूल, गंतव्य और सभी ठहराव बिंदुओं की पहचान करने के लिए किया जाता है।

Date :
Page No. :

एयरलाइन टिकटिंग और आरक्षण

एक ट्रैवल एजेंसी कई तरह के पर्यटन उत्पाद बेचती है। एयरलाइन टिकटिंग और आरक्षण अभी भी राजस्व का एक प्रमुख स्रोत है। ट्रैवल एजेंसियां विभिन्न एयरलाइनों की ओर से एयरलाइन टिकटिंग और आरक्षण का कार्य करती है।

आरक्षण

यह सभी प्रकार की ट्रैवल एजेंसियों का एक बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। एक ट्रैवल एजेंसी लगातार आवास क्षेत्र, परिवहन क्षेत्र और अन्य मनोरंजन संगठनों के साथ संपर्क बनाती है ताकि सांस्कृतिक कार्यक्रमों और परिवहन में कमरे और सीटें आरक्षित की जा सकें।

मुद्रा सेवाएँ

सरकारी निकाय द्वारा अधिकृत अनुमोदित ट्रैवल एजेंसी पर्यटकों को मुद्रा विनिमय सेवाएं प्रदान करती है।

Date :
Page No. : 16

भारत चिकित्सा पर्यटन के रूप में क्यों लोकप्रिय हो रहा है?

नवीन उपकरणों की उपलब्धता के कारण, भारत बहुत से चिकित्सा पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है, जिनमें से अधिकांश अफ्रीकी देशों से है। कैंसर के इलाज के अलावा, कॉस्मेटिक सर्जरी दूसरी सबसे ज्यादा पसंद की जाने वाली चिकित्सा सेवा है

भारत के किस राज्य में सबसे ज्यादा मेडिकल टूरिज्म है?

अपने शीर्ष अस्पतालों, कुशल चिकित्सा पेशेवरों, समग्र उपचार परंपराओं और प्रचुर पर्यटन अवसरों के साथ, तमिलनाडु चिकित्सा पर्यटन के लिए गंतव्य के रूप में उभरा है, जो दुनिया भर के रोगियों की जरूरतों को पूरा करता है।

Date :
Page No. :

चिकित्सा पर्यटन से आप क्या समझते है?

चिकित्सा पर्यटन को मुख्य रूप से स्वास्थ्य देखभाल प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली यात्रा के रूप में परिभाषित किया जाता है। चिकित्सा पर्यटक कई तरह की प्रक्रियाओं के लिए यात्रा कर सकते है, जिसमें नए या प्रायोगिक उपचार शामिल हैं। चिकित्सा पर्यटक विकासशील या विकसित देशों की यात्रा भी कर सकते हैं।

पर्यटन की प्रमुख विशेषताएं क्या है?

पर्यटन में स्थानीय और अंतरराष्ट्रीय दोनों तरह की यात्राएँ शामिल है। छुट्टियों और पर्यटन के प्रकारों का पता लगाएँ और पर्यटन की विशेषताओं और प्रभावों के बारे में जानें, जिसमें अमूर्तता, नाशवानता, मौसमी, परस्पर निर्भरता और विविधता शामिल है।

Date :
Page No. : 17

पर्यटन का स्वरूप क्या है?

पर्यटन एक सामाजिक-आर्थिक घटना है जिसमें पर्यटकों और आगंतुकों की गतिविधियों और अनुभवों को शामिल किया जाता है जो उनके घर के माहौल से दूर होते है और जिन्हें यात्रा और पर्यटन उद्योग और मेजबान गंतव्य द्वारा सेवा प्रदान की जाती है। इन गतिविधि अनुभव और सेवाओं के कुल योग को पर्यटन उत्पाद के रूप में देखा जा सकता है।

पर्यटन की प्रकृति क्या है।

पर्यटन की प्रकृति

पर्यटन एक सामाजिक-आर्थिक घटना है जिसमें पर्यटकों और आगंतुकों की गतिविधियों और अनुभवों को शामिल किया जाता है जो उनके घर के माहौल से दूर होते है और जिन्हें यात्रा और पर्यटन उद्योग और मेजबान गंतव्य द्वारा सेवा प्रदान की जाती है

Date :
Page No. :

पर्यटन का उद्देश्य क्या है?

पर्यटन आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है

इससे हमारा विदेशी भंडार बढ़ेगा, पर्यटकों की संख्या में वृद्धि होने पर भोजनालय, दुकानों और सेवाओं की संख्या में वृद्धि होगी। इसके अलावा पर्यटन बढ़ने से बुनियादी ढांचा और रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे।

प्रथम विश्व पर्यटन दिवस कब मनाया गया था?

विश्व पर्यटन दिवस की शुरुआत 1980 में हुई थी और यह नैतिक और टिकाऊ पर्यटन प्रथाओं को बढ़ावा देता है जो पर्यटकों, स्थानीय समुदायों, जानवरों और ग्रह की भलाई सुनिश्चित करता है।

Date :
Page No. : 18

पर्यटन और पर्यटक में क्या अंतर है

पर्यटन का अर्थ है सभी स्थलों, गतिविधियों, भोजन का आनंद लेना, स्थानीय लोगों के साथ घूमना-मिलना और अविस्मरणीय अनुभव प्राप्त करना।
एक पर्यटक और एक यात्री के बीच क्या अंतर है? यात्री वह व्यक्ति होता है जो किसी भी कारण से यात्रा करता है। पर्यटक वह यात्री होता है जो मनोरंजन के लिए यात्रा करता है।

पर्यटन सुविधाएं क्या है?

पर्यटन सुविधाएँ उन सुविधाओं और सेवाओं को संदर्भित करती है जो पर्यटकों के लिए समग्र यात्रा अनुभव को बढ़ाती है। ये सुविधाएं पर्यटकों को विशिष्ट गंतव्यों की ओर आकर्षित करने और उनके आवास और गतिविधियों के विकल्पों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।